Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

2019 के आम लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन : मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

Ajay Kumar Prabhakar
Assistant Professor, Department of Political Science
Jamalpur College, Jamalpur Munger University, Munger

सरांश :–

मुंगेर, बिहार का वह क्षेत्र जहाँ गंगा की शांत लहरें सामाजिक–आर्थिक जटिलताओं के बीच मानवीय आकांक्षाओं को संजोती हैं, 2019 के लोकसभा चुनाव में लोकतांत्रिक उत्साह का साक्षी बना। यह विश्लेषणात्मक अध्ययन, मुंगेर लोकसभा क्षेत्र जमालपुर, लखीसराय और पटना के कुछ हिस्सों को समेटे हुए के मतदान व्यवहार की गहन पड़ताल करता है, जहाँ 18.8 लाख मतदाताओं ने 53.92% मतदान के साथ अपनी आवाज बुलंद की। जनता दल (यूनाइटेड) के राजीव रंजन सिंह (ललन सिंह) ने 5,28,762 मत (51%) प्राप्त कर कांग्रेस की नीलम देवी (3,60,825 मत, 34.81%) को मतों के अंतर से पराजित किया।

2019 के आम लोकसभा चुनाव में मुंगेर लोकसभा क्षेत्र का मतदान व्यवहार राष्ट्रीय और स्थानीय कारकों का मिश्रण दर्शाता है। यह क्षेत्र, बिहार के पूर्वांचल में गंगा के किनारे बसा, सामाजिक–आर्थिक विविधता वाला है, जहां ग्रामीण जनसंख्या, विशेषकर अनुसूचित जाति, किसान, मजदूर और छोटे व्यापारी, मतदाता आधार बनाते हैं। मुंगेर में मतदाता व्यवहार जातिगत समीकरणों से प्रभावित रहा। यादव, कुर्मी, ब्राह्मण और मुस्लिम समुदायों की मिश्रित जनसंख्या ने मतदान को दिशा दी। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के वादों के दम पर जीत हासिल की। दूसरी ओर, महागठबंधन ने सामाजिक न्याय और स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। राष्ट्रीय मुद्दों, जैसे आर्थिक विकास और सुरक्षा, ने ऊंची जातियों और कुछ OBC समुदायों की NDA ओर आकर्षित किया। हालांकि, बाढ़, बेरोजगारी और कृषि संकट जैसे स्थानीय मुद्दों ने ग्रामीण मतदाताओं को प्रभावित किया।

महिलाओं का मतदान पुरुषों से अधिक रहा, जो NDA की सशक्तिकरण योजनाओं से प्रेरित था। युवा मतदाताओं में बेरोजगारी के कारण असंतोष था, जिससे विपक्ष को समर्थन मिला। ग्रामीण क्षेत्रों में NDA का प्रभाव रहा, जबकि शहरी क्षेत्रों में विपक्ष ने बेहतर प्रदर्शन किया। संगठनात्मक रणनीति और प्रचार ने NDA को बढ़त दी।

मुंगेर का मतदान व्यवहार दर्शाता है कि जातिगत वफादारी अब भी महत्वपूर्ण है, लेकिन राष्ट्रीय मुद्दों ने इसे चुनौती दी। विकास और बुनियादी ढांचे के वादों ने मतदाताओं को प्रभावित किया, लेकिन बेरोजगारी और पर्यावरणीय समस्याएं भविष्य में मतदान पैटर्न बदल सकती हैं। यह क्षेत्र भारत के जटिल लोकतंत्र का प्रतिबिंब है, जहां मतदाता स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों संदर्भों से प्रभावित होते हैं। दलों को स्थानीय जरूरतों पर ध्यान देना होगा ताकि मतदाताओं का विश्वास जीता जा सके। मुंगेर का यह चुनावी परिदृश्य सूचित और जागरूक मतदाता आधार को दर्शाता है, जो अपनी चुनौतियों के बावजूद लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय है। यह अध्ययन, मात्र आँकड़ों से परे, मतदाताओं की आकांक्षाओं, सामाजिक गतिशीलता और स्थानीय मुद्दों के प्रभाव को उजागर करता है। इस अध्ययन में इन सवालों के जवाब खोजने का प्रयास किया गया है। मुंगेर में मतदान व्यवहार को समझने के लिए सामाजिक कारक जैसे जातिगत गतिशीलता, आर्थिक मुद्दे जैसे बेरोजगारी और बुनियादी ढांचे की कमी, और राजनीतिक कारक जैसे उम्मीदवारों की छवि और प्रचार अभियानों की भूमिका का विश्लेषण महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द :– मतदान, व्यवहार, विविधता, परिवर्तनशीलता, निरंतरता, राजनीतिक।

परिचय :–

2019 का आम लोकसभा चुनाव भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसमें राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दों ने मतदाताओं के व्यवहार को आकार दिया। मुंगेर लोकसभा क्षेत्र, बिहार के पूर्वांचल में गंगा नदी के किनारे बसा, सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है, जो मुंगेर जिले के साथ–साथ बेगूसराय, जहानाबाद और लखीसराय के कुछ हिस्सों को समेटे हुए है। इस क्षेत्र की जनसंख्या मुख्यतः ग्रामीण है, जिसमें किसान, मजदूर और छोटे व्यापारी मतदाता आधार का मुख्य हिस्सा हैं। 2019 में 16.5 लाख पंजीकृत मतदाताओं में से लगभग 53.92% ने मतदान किया, जो राष्ट्रीय औसत (67%) से कम था। यह कम मतदान और मतदाता व्यवहार की जटिलता इस अध्ययन का आधार बनाती है, जो मुंगेर के मतदान व्यवहार को सामाजिक संरचना, राजनीतिक गतिशीलता और स्थानीय मुद्दों के संदर्भ में विश्लेषित करता है।

मुंगेर का मतदान व्यवहार जातिगत और सामाजिक समीकरणों से गहरे प्रभावित रहा। यादव, कुर्मी, ब्राह्मण और मुस्लिम समुदायों की मिश्रित जनसंख्या ने मतदान को दिशा दी। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन NDA और महागठबंधन के बीच कड़ा मुकाबला देखा गया, जहां राष्ट्रीय मुद्दों, जैसे आर्थिक विकास और सुरक्षा, ने मतदाताओं को प्रभावित किया। स्थानीय स्तर पर, गंगा की बाढ़, बेरोजगारी और कृषि संकट जैसे मुद्दों ने ग्रामीण मतदाताओं के बीच असंतोष को बढ़ाया। इन मुद्दों ने मतदाता व्यवहार को जटिल बनाया, जहां जातिगत निष्ठा और विकास के वादों के बीच संतुलन देखा गया।

महिलाओं का मतदान पुरुषों से अधिक रहा, जो सामाजिक योजनाओं से प्रेरित था, जबकि युवा मतदाताओं में बेरोजगारी के कारण असंतोष स्पष्ट था। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मतदान पैटर्न में अंतर दिखा, जहां छव। ने ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूती दिखाई। यह परिचय मुंगेर के मतदान व्यवहार के विश्लेषण की नींव रखता है, जो भारत के लोकतंत्र की जटिलताओं को दर्शाता है। यह अध्ययन सामाजिक–आर्थिक कारकों, राजनीतिक रणनीतियों और स्थानीय चुनौतियों के आधार पर मतदाता व्यवहार की गहरी समझ प्रदान करने का प्रयास करता है, ताकि मुंगेर जैसे क्षेत्रों में लोकतांत्रिक भागीदारी को बेहतर समझा जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मतदान व्यवहार का विश्लेषण : मुंगेर लोकसभा क्षेत्र में 2019 के आम चुनाव में मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों की जांच करना।
2. स्थानीय–राष्ट्रीय मुद्दों का प्रभाव : राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दों, जैसे जाति, धर्म, और आर्थिक स्थिति, के मतदाता निर्णयों पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. राजनीतिक रणनीतियों की समझ : मुंगेर में राजनीतिक दलों की चुनावी रणनीतियों और उनके मतदाता व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा सामाजिक विज्ञान में शोध का एक अभिन्न अंग है। यह शोध के लिए आधार तैयार करती है और विषय से संबंधित मौजूदा ज्ञान को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करती है। सामाजिक विज्ञान में शोध छात्रों को विभिन्न स्रोतों जैसे शोध पत्र, किताबें, और पत्रिकाओं का गहन अध्ययन करना चाहिए। साहित्य समीक्षा के दौरान प्रमुख सिद्धांतों, अवधारणाओं और अनुसंधान अंतरालों की पहचान की जाती है। यह प्रक्रिया शोध के प्रश्न को स्पष्ट करने में मदद करती है और नए दृष्टिकोण प्रदान करती है। विभिन्न अध्ययनों के बीच तुलना और उनके निष्कर्षों का विश्लेषण करके, शोधकर्ता अपने अध्ययन की प्रासंगिकता को स्थापित करते हैं। साहित्य समीक्षा में संक्षिप्तता, तार्किक क्रम और सटीक उद्धरण महत्वपूर्ण हैं। यह न केवल शोध की दिशा को मजबूत करती है, बल्कि क्षेत्र में नए योगदान की संभावनाओं को भी उजागर करती है :–

कुमार, संजय एवं राय, प्रवीण (2013) की पुस्तक मेजरिंग वोटिंग बिहेवियर इन इंडिया भारतीय संदर्भ में मतदान व्यवहार को मापने की पद्धतियों पर एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह पुस्तक मुख्य रूप से चुनाव सर्वेक्षणों, एक्जिट पोल्स और मतदाता राय को समझने के विभिन्न उपकरणों पर केंद्रित है। लेखक सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज (सीएसडीएस) से जुड़े होने के कारण, भारतीय लोकतंत्र की जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए, मतदान व्यवहार के मापन की ऐतिहासिक विकास यात्रा का वर्णन करते हैं। वे तर्क देते हैं कि भारत में मतदान व्यवहार को मापना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि यह न केवल जाति, धर्म और आर्थिक स्थिति जैसे सामाजिक कारकों से प्रभावित होता है, बल्कि सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधताओं से भी। पुस्तक में वर्णित अनुसार, 1950 के दशक से शुरू हुए चुनाव अध्ययन आज के डिजिटल युग में विकसित हो चुके हैं, लेकिन अभी भी सामना करना पड़ता है गोपनीयता और सटीकता के मुद्दों से।

लेखक विभिन्न विधियों जैसे फेस–टू–फेस इंटरव्यू, डमी बैलट और मल्टीपल चॉइस प्रश्नों का विश्लेषण करते हैं, जो मतदाताओं की वास्तविक पसंद को उजागर करने में सहायक हैं। वे जोर देते हैं कि भारत में एक्जिट पोल्स अमेरिका की तरह सटीक नहीं होते, क्योंकि यहां मतदाता अपनी राय छिपाने की प्रवृत्ति रखते हैं, विशेषकर दलित और अल्पसंख्यक समुदायों में। यह पुस्तक मतदान व्यवहार के मापन को केवल सांख्यिकीय व्यायाम नहीं, बल्कि सामाजिक–राजनीतिक प्रक्रिया के रूप में देखने का आह्वान करती है। उदाहरणस्वरूप, 1998 के लोकसभा चुनावों के अध्ययन से प्राप्त अनुभवों के आधार पर, लेखक भविष्यवाणी मॉडलों की सीमाओं पर चर्चा करते हैं।

मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के 2019 चुनाव अध्ययन के लिए यह साहित्य प्रासंगिक है, क्योंकि यह स्थानीय मुद्दों जैसे बेरोजगारी और जातिगत गठबंधनों को राष्ट्रीय सर्वेक्षण विधियों से जोड़ने का आधार प्रदान करता है। हालांकि, पुस्तक में ग्रामीण भारत की विशिष्ट चुनौतियों, जैसे मुंगेर जैसी क्षेत्रों में साक्षात्कारकर्ता पूर्वाग्रह, पर गहन चर्चा की कमी एक सीमा है। कुल मिलाकर, यह कार्य भारतीय चुनाव अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है, जो भावी शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होता है। यह न केवल विधियों की व्यावहारिकता पर प्रकाश डालता है, बल्कि लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत करने के लिए नीतिगत सुझाव भी देता है।

मुजराई, प्रशांत (2024) की पुस्तक पोल्स, पॉलिटिक्स, एंड पब्लिक सेंटिमेंट : ए स्टडी ऑफ वोटिंग बिहेवियर इन इंडिया भारतीय मतदान व्यवहार के अध्ययन में एक समकालीन और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक 2019 के लोकसभा चुनावों सहित हाल के चुनावों में मतदाताओं की भावनाओं और उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया पर केंद्रित है। लेखक ने मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों जैसे सामाजिक–आर्थिक स्थिति, क्षेत्रीय पहचान, और डिजिटल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया है। विशेष रूप से, यह पुस्तक सोशल मीडिया और समाचार चौनलों के प्रभाव को उजागर करती है, जो मतदाताओं की राय को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुजराई ने भारत के विविध सामाजिक ताने–बाने को ध्यान में रखते हुए, ग्रामीण और शहरी मतदाताओं के बीच मतदान

व्यवहार में भिन्नता को रेखांकित किया है। उदाहरण के लिए, बिहार जैसे राज्यों में, जहां मुंगेर लोकसभा क्षेत्र शामिल है, जाति और सामुदायिक गठबंधन मतदाता प्राथमिकताओं को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हैं। लेखक ने डेटा संग्रह के लिए मिश्रित पद्धतियों का उपयोग किया, जिसमें सर्वेक्षण, साक्षात्कार, और सोशल मीडिया एनालिटिक्स शामिल हैं। यह दृष्टिकोण मतदाता मनोविज्ञान की गहरी समझ प्रदान करता है।

पुस्तक में यह भी बताया गया है कि राष्ट्रीय मुद्दे, जैसे आर्थिक सुधार और राष्ट्रीय सुरक्षा, स्थानीय मुद्दों जैसे बेरोजगारी और बुनियादी ढांचे के साथ कैसे अंतर्निहित होते हैं। हालांकि, पुस्तक में क्षेत्रीय विशिष्टताओं, जैसे मुंगेर के स्थानीय राजनीतिक इतिहास, पर गहन विश्लेषण की कमी एक सीमा है। फिर भी, यह कार्य 2019 के चुनावों के संदर्भ में मतदाता व्यवहार को समझने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। यह शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के लिए डिजिटल युग में मतदाता प्रेरणाओं को समझने में उपयोगी है, विशेष रूप से मुंगेर जैसे क्षेत्रों में, जहां सामाजिक और आर्थिक कारक जटिल रूप से जुड़े हुए हैं। यह पुस्तक भावी अध्ययनों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु है।

दास, सिमंचल (2018) की पुस्तक वोटिंग बिहेवियर इन इंडिया : डायनामिक्स एंड डिटर्मिनेंट्स भारतीय मतदान व्यवहार के गतिशील और निर्धारक कारकों पर एक व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक भारत के जटिल सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य में मतदाताओं की पसंद को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों, जैसे जाति, धर्म, लिंग, और आर्थिक स्थिति, की पड़ताल करती है। लेखक ने भारतीय लोकतंत्र की विविधता को ध्यान में रखते हुए, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मतदान पैटर्न की तुलनात्मक विश्लेषण किया है। विशेष रूप से, यह पुस्तक मतदाता व्यवहार में क्षेत्रीय और राष्ट्रीय मुद्दों के बीच परस्पर क्रिया को रेखांकित करती है।

दास ने अपने अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया, जिसमें ऐतिहासिक मतदान डेटा, सर्वेक्षण, और क्षेत्रीय अध्ययनों का विश्लेषण शामिल है। पुस्तक में बिहार जैसे राज्यों में जातिगत गठबंधनों और सामुदायिक पहचान के प्रभाव को विशेष रूप से उजागर किया गया है, जो मुंगेर लोकसभा क्षेत्र जैसे क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक है। लेखक तर्क देते हैं कि मतदाता व्यवहार केवल व्यक्तिगत पसंद का परिणाम नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक दलों की रणनीतियों से भी प्रभावित होता है।

यह पुस्तक 2019 के लोकसभा चुनावों के संदर्भ में मुंगेर के मतदान व्यवहार को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। हालांकि, पुस्तक में डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के प्रभाव पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है, जो आधुनिक चुनावों में एक महत्वपूर्ण कारक बन चुका है। फिर भी, यह कार्य मतदाता व्यवहार के सामाजिक और आर्थिक निर्धारकों को समझने में एक ठोस योगदान देता है। यह शोधकर्ताओं के लिए क्षेत्रीय संदर्भों में मतदाता प्रेरणाओं का विश्लेषण करने हेतु एक उपयोगी ढांचा प्रदान करता है, विशेष रूप से मुंगेर जैसे सामाजिक रूप से जटिल क्षेत्रों में।

शोध अंतराल

2019 के लोकसभा चुनावों में मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के मतदान व्यवहार का अध्ययन भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण शोध अंतराल को दर्शाता है। राष्ट्रीय स्तर पर मतदान व्यवहार के अध्ययन सामान्य रूप से जाति, धर्म और प्रचार रणनीतियों पर केंद्रित हैं, किंतु मुंगेर जैसे क्षेत्र, जहां 62% ग्रामीण मतदाता, 14.8% अनुसूचित जाति और 4.7% मुस्लिम आबादी है, की विशिष्ट गतिशीलता पर शोध का अभाव है।

मुंगेर में 2019 के चुनाव परिणाम, जिसमें जदयू ने 1,67,937 लाख वोटों से जीत हासिल की, स्थानीय मुद्दों जैसे बाढ़, कृषि संकट और बेरोजगारी से प्रभावित थे। फिर भी, इन कारकों का मतदाता व्यवहार पर प्रभाव का कोई गहन, क्षेत्र–विशिष्ट अध्ययन नहीं हुआ। मौजूदा शोध सामान्य विश्लेषणों तक सीमित हैं, जो मुंगेर की सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को संबोधित नहीं करते। यह अंतराल एक प्राथमिक, सर्वेक्षण–आधारित अध्ययन की आवश्यकता को उजागर करता है, जो क्षेत्रीय लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की गहरी समझ प्रदान करेगा।

शोध पद्धति

2019 के लोकसभा चुनावों में मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक मिश्रित शोध पद्धति पर आधारित होगा, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोण शामिल होंगे। यह अध्ययन द्वितीयक डेटा संग्रहण तकनीकों का उपयोग करेगा ताकि क्षेत्र–विशिष्ट मतदान गतिशीलता को गहराई से समझा जा सके।

द्वितीयक डेटा संग्रहण भारत के चुनाव आयोग के आधिकारिक आंकड़े, जिला प्रशासन की रिपोर्ट, और स्थानीय समाचार पत्रों का विश्लेषण किया जाएगा ताकि मतदान पैटर्न और ऐतिहासिक रुझानों को समझा जा सके।

चुनौतियां : 2019 के आम लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन – मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

2019 के आम लोकसभा चुनाव में मुंगेर लोकसभा क्षेत्र का मतदान व्यवहार कई चुनौतियों का सामना करता है, जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित है। बिहार के पूर्वांचल में गंगा के किनारे बसा मुंगेर, ग्रामीण–प्रधान क्षेत्र है, जहां किसान, मजदूर और छोटे व्यापारी मतदाता आधार का मुख्य हिस्सा हैं। 2019 में 16.5 लाख पंजीकृत मतदाताओं में से केवल

53.92% ने मतदान किया, जो राष्ट्रीय औसत से कम था। यह कम मतदान और अन्य कारक मतदाता व्यवहार को समझने में प्रमुख चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं।

पहली चुनौती जातिगत ध्रुवीकरण है। मुंगेर में यादव, कुर्मी, ब्राह्मण और मुस्लिम समुदायों की मिश्रित जनसंख्या ने मतदान को जटिल बनाया। जातिगत निष्ठा ने मतदाताओं को NDA और महागठबंधन के बीच बांटा, जिससे मुद्दों पर आधारित मतदान कमजोर हुआ।

दूसरी चुनौती स्थानीय मुद्दों, जैसे बाढ़, बेरोजगारी और कृषि संकट, की उपेक्षा थी। गंगा की वार्षिक बाढ़ ने ग्रामीण मतदाताओं को प्रभावित किया, लेकिन राजनीतिक दलों ने इन समस्याओं के स्थायी समाधान पर कम ध्यान दिया, जिससे मतदाताओं में निराशा बढ़ी।

तीसरी चुनौती थी मतदाता जागरूकता और पहुंच। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और सूचना की कमी ने मतदाताओं को भ्रामक प्रचार का शिकार बनाया। मतदान केंद्रों तक पहुंच, विशेषकर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में, एक बड़ी बाधा थी। महिलाओं का मतदान पुरुषों से अधिक रहा, किंतु सामाजिक रूढ़ियों ने उनकी स्वतंत्र पसंद को सीमित किया। युवा मतदाताओं में बेरोजगारी के कारण असंतोष था, लेकिन उनकी भागीदारी कम रही, जो राजनीतिक प्रक्रिया से अलगाव को दर्शाता है।

चौथी चुनौती थी प्रचार और संगठनात्मक असमानता। NDA की मजबूत संगठनात्मक रणनीति ने विपक्ष को पीछे छोड़ दिया। शहरी क्षेत्रों में महागठबंधन को समर्थन मिला, लेकिन ग्रामीण बूथों पर NDA का प्रभुत्व रहा। इसके अतिरिक्त, मतदाता सूची में त्रुटियां और तकनीकी समस्याएं भी बाधक थीं।

इन चुनौतियों से पता चलता है कि मुंगेर का मतदान व्यवहार जटिल और बहुआयामी है। भविष्य में, दलों को स्थानीय मुद्दों पर ध्यान, मतदाता शिक्षा और बेहतर पहुंच सुनिश्चित करनी होगी। मुंगेर का यह परिदृश्य भारत के लोकतंत्र की चुनौतियों को दर्शाता है, जहां जागरूकता और भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि मतदाता अपनी आवाज प्रभावी ढंग से उठा सकें।

अवसर : 2019 के आम लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन – मुंगेर लोकसभा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

2019 के आम लोकसभा चुनाव में मुंगेर लोकसभा क्षेत्र का मतदान व्यवहार भारत के लोकतांत्रिक परिदृश्य का एक सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत करता है। बिहार के पूर्वांचल में गंगा के तट पर बसा मुंगेर, सामाजिक–आर्थिक विविधता और ऐतिहासिक महत्व का केंद्र है। यह क्षेत्र ग्रामीण जनसंख्या पर आधारित है, जिसमें किसान, मजदूर और छोटे व्यापारी प्रमुख हैं। 2019 में 16.5 लाख पंजीकृत मतदाताओं में से 53.92% ने मतदान किया, जो राष्ट्रीय औसत से कम था। यह अध्ययन मुंगेर के मतदान व्यवहार को सामाजिक संरचना, राजनीतिक गतिशीलता और स्थानीय मुद्दों के आधार पर विश्लेषित करता है।

मुंगेर में मतदाता व्यवहार पर जातिगत समीकरणों का गहरा प्रभाव रहा। यादव, कुर्मी, ब्राह्मण और मुस्लिम समुदायों की मिश्रित जनसंख्या ने मतदान को आकार दिया। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के नैरेटिव के सहारे जीत हासिल की। इसके विपरीत, महागठबंधन ने सामाजिक न्याय और स्थानीय मुद्दों पर जोर दिया। राष्ट्रीय मुद्दों, जैसे आर्थिक प्रगति और सुरक्षा, ने ऊंची जातियों और कुछ व्ठ समुदायों को NDA की ओर खींचा। स्थानीय स्तर पर, बाढ़, बेरोजगारी और कृषि संकट ने मतदाताओं को प्रभावित किया, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां NDA के बुनियादी ढांचे के वादों ने समर्थन जुटाया।

महिलाओं का मतदान पुरुषों की तुलना में अधिक रहा, जो NDA की सशक्तिकरण योजनाओं से प्रेरित था। युवा मतदाताओं में बेरोजगारी के कारण असंतोष देखा गया, जिसने विपक्ष को समर्थन दिलाया। ग्रामीण क्षेत्रों में NDA का प्रभुत्व रहा, जबकि शहरी क्षेत्रों में महागठबंधन ने बेहतर प्रदर्शन किया। संगठनात्मक रणनीति और प्रचार ने NDA को निर्णायक बढ़त दी। मुंगेर का मतदान व्यवहार यह दर्शाता है कि जातिगत निष्ठा अब भी प्रभावी है, लेकिन राष्ट्रीय मुद्दों ने इसे चुनौती दी। विकास और बुनियादी ढांचे के वादों ने मतदाताओं को आकर्षित किया, किंतु बेरोजगारी और पर्यावरणीय समस्याएं भविष्य में मतदान पैटर्न को बदल सकती हैं। मुंगेर भारत के जटिल लोकतंत्र का प्रतीक है, जहां मतदाता स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों के बीच संतुलन बनाते हैं। राजनीतिक दलों को स्थानीय आवश्यकताओं पर ध्यान देना होगा ताकि मतदाताओं का विश्वास जीता जा सके। यह क्षेत्र एक जागरूक मतदाता आधार को दर्शाता है, जो अपनी चुनौतियों के बावजूद लोकतंत्र में सक्रिय है।

संदर्भ सूची :–

1. Kumar, Sanjay & Rai, Praveen (2013). *Measuring Voting Behaviour in India*. SAGE Publications India Pvt. Ltd., New Delhi.
2. Kumar, Sanjay (2021). *Elections in India: An Overview*. Routledge India, London.
3. Mujrai, Prasanta (2024). *Polls, Politics, and Public Sentiment: A Study of Voting Behavior in India*. Amazon Services LLC, United States.
4. Das, Simanchala (2018). *Voting Behaviour in India: Dynamics and Determinants*. Independently Published, Odisha.
5. Banerjee, Mukulika (2014). *Why India Votes*. Routledge India, New Delhi.
6. Chawla, Navin (2019). *Every Vote Counts: The Story of India's Elections*. HarperCollins India, New Delhi.
7. Roy, Prannoy & Sopariwala, Dorab R. (2019). *The Verdict: Decoding India's Elections*. Penguin Random House India, Gurgaon.
8. Singh, Shivam Shankar (2019). *How to Win an Indian Election*. Penguin Random House India, New Delhi.
9. Election Commission of India (2019). "General Election 2019 - Munger Lok Sabha Constituency Results." https://eci.gov.in
10. Times Now (2019). "Munger Election Results 2019: Rajiv Ranjan Singh defeats INC's Nilam Devi." https://www.timesnownews.com
11. Hindustan Times (2019). "Munger Lok Sabha Election: Latest News and Updates." https://www.hindustantimes.com
12. News18 (2024). "Munger Election Result 2024 Live: Winning and Losing Candidates." https://www.news18.com
13. Times of India (2019). "Munger Bogus Voting: Zonal Magistrate Dismissed." https://timesofindia.indiatimes.com
14. Result University (2023). "Munger Lok Sabha Election Result - Parliamentary Constituency.
15. Bharti, A., & Pal, R. (2020). "Social Interactions in Voting Behavior: Evidence from India.
16. Kumar, S. (2021). "Electoral Dynamics and Voting Behavior in West Bengal, 2004-2019.
17. Bharatpedia (2023). "Munger Lok Sabha Constituency: Electoral History." https://en.bharatpedia.org
18. The Indian Express (2019). "Bihar Lok Sabha Elections 2019: Key Constituencies and Issues." https://indianexpress.com
19. Jha, P. (2019). "Caste and Politics in Bihar: A Study of Voting Patterns." *Economic and Political Weekly*.
20. Government of Bihar (2019). "District Profile: Munger Socio-Economic Report." https://munger.nic.in